पत्रकारिता के छात्रों द्वारा सम्पादित

सुरलोक समाचार

नई दृष्टि, नए विचार

हिन्दी संदर्शिका

श्री गुरु नानक देव खालसा महाविद्यालय, देव नगर, नई दिल्ली-110005 | मई, 2025 | पृष्ठ संख्या - 1

महाकुंभः आस्था, संस्कृति और परंपरा का महोत्सव

पलक गुप्ता
हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार प्रथम वर्ष

प्रयागराज, उत्तर प्रदेश में आयोजित महाकुंभ की चर्चा पूरे विश्व में हो रही है। यह धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक आयोजन उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री माननीय योगी आदित्यनाथ जी के नेतृत्व में 13 जनवरी 2025 से 26 फरवरी 2025 तक आयोजित किया जा रहा है। महाकुंभ का आयोजन 144 वर्षों के अंतराल पर होता है। इससे पहले हर 6 वर्ष में अर्धकुंभ और हर 12 वर्ष में पूर्णकुंभ का आयोजन किया जाता है। कुंभ मेले का इतिहास लगभग 850 वर्षों पुराना है। इसे भारत के चार पवित्र स्थलों (प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक) में आयोजित किया जाता है। पौराणिक कथाओं के अनुसार, कुंभ मेला समुद्र मंथन की कथा से प्रेरित है।

समुद्र मंथन के दौरान, जब अमृत कलश प्राप्त हुआ, तो देवताओं और राक्षसों में उसे पाने के लिए संघर्ष शुरू हो गया। भगवान इंद्र के पुत्र जयंत अमृत कलश लेकर भागे, और इस दौरान अमृत की कुछ बूंदें पृथ्वी के चार स्थानों पर गिरीं प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक। इन्हीं स्थानों पर कुंभ मेले का आयोजन होता है। मान्यता है कि इंद्र के पुत्र जयंत को स्वर्ग तक पहुंचने में 12 दिन लगे थे, जो पृथ्वी के 12 वर्षों के बराबर हैं। इसलिए हर 12 वर्ष में कुंभ का आयोजन होता है।महाकुंभ केवल एक धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि आस्था, संस्कृति और परंपरा का अद्भुत संगम है। श्रद्धालु यहां आकर पवित्र नदियों में स्नान करते हैं, जिससे उनके पापों का प्रायश्चित माना जाता है। इस आयोजन में साधु–संतों के साथ देश–विदेश से लाखों लोग शामिल होते हैं।

इस वर्ष के महाकुंभ में 400 से 450 मिलियन लोगों के आने की उम्मीद है। यह दुनिया का सबसे बड़ा मेला है, जहां न केवल साधु–संत, बल्कि युवा पीढ़ी भी अपनी संस्कृति से जुड़ने के लिए बढ़–चढ़कर भाग ले रही है। महाकुंभ भारतीय संस्कृति की समृद्धि को प्रदर्शित करता है और इसके जरिए भारत की अर्थव्यवस्था और पर्यटन को भी बढ़ावा मिलता है।महाकुंभ भारत के लिए गर्व का विषय है। इस आयोजन में दुनिया के कोने–कोने से लोग भाग लेते हैं और यह भारत की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर को विश्व मंच पर प्रस्तुत करता है। यह मेला आस्था का एक ऐसा प्रतीक है, जो समाज को एकता, शांति और सद्भाव का संदेश देता है।

ऑपरेशन सिंदूर : निर्णायक नेतृत्व और राष्ट्रीय सुरक्षा का नवयुग

रुद्राक्ष शर्मा
हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार प्रथम वर्ष

ऑपरेशन सिंदूर भारत सरकार की निर्णायक और सशक्त राष्ट्रीय सुरक्षा नीति का उदाहरण है, जिसमें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारतीय सेना ने पाकिस्तान और पीओके में आतंकी ठिकानों पर सटीक और सफल कार्रवाई की। पहलगाम आतंकी हमले के तुरंत बाद प्रधानमंत्री मोदी ने स्पष्ट कर दिया था कि आतंकियों और उनके सरपरस्तों को ऐसी सजा मिलेगी जिसकी उन्होंने कल्पना भी नहीं की होगी। सरकार ने उच्चस्तरीय बैठकों में सेना को पूरी छूट दी और राष्ट्रीय हित को सर्वोपरि रखते हुए अंतरराष्ट्रीय दबाव की परवाह किए बिना कार्रवाई का आदेश दिया। ऑपरेशन सिंदूर के तहत भारतीय सेना ने 9 आतंकी ठिकानों, 11 हवाई अड्डों और कई सैन्य ढांचों को नष्ट किया, जिससे पाकिस्तान को भारी नुकसान हुआ। ऑपरेशन ने दिखाया कि भारत जो कहता है, वह करता भी है–यह सरकार की विश्वसनीयता और दृढ़ता का प्रमाण है। सरकार ने आतंकवाद के खिलाफ 'न्यू नॉर्मल' स्थापित किया, जिससे भारत की छवि वैश्विक स्तर पर और मजबूत हुई। प्रधानमंत्री मोदी ने राष्ट्र को 12 मई को संबोधित करते हुए सेना के शौर्य और सरकार की नीति को रेखांकित किया, साथ ही आतंकियों को स्पष्ट चेतावनी दी। सरकार ने ऑपरेशन के बाद सिंधु जल समझौते को रोकना, पाक नागरिकों को वापस भेजना और व्यापार बंद करना जैसे रणनीतिक कदम भी उठाए, जिससे पाकिस्तान पर चौतरफा दबाव बना। सरकार के दृष्टिकोण से ऑपरेशन सिंदूर भारत की सुरक्षा नीति, नेतृत्व और राष्ट्रीय स्वाभिमान का प्रतीक है। भारत अपनी एकता, अखंडता और नागरिकों की सुरक्षा से कभी समझौता नहीं करेगा, और आतंकवाद के खिलाफ हर स्तर पर निर्णायक कार्रवाई करेगा।

बदल रही है दिल्ली – एक स्वच्छता महाअभियान की ओर

सूचना नंदा
हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार तृतीय वर्ष

दिल्ली, भारत की राजधानी, एक ऐसा महानगर है जो न केवल प्रशासनिक और राजनीतिक गतिविधियों का केंद्र है, बल्कि देश की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक धरोहरों का जीवंत प्रतीक भी है। शिक्षा, व्यापार, तकनीक, पर्यटन, न्याय, मीडिया आदि क्षेत्र में दिल्ली अग्रणी है, परंतु इसकी एक गंभीर समस्या है – गंदगी और अस्वच्छता। वर्ष दर वर्ष जनसंख्या वृद्धि, बढ़ते वाहनों की संख्या, निर्माण गतिविधियाँ और अव्यवस्थित प्रबंधन ने दिल्ली को प्रदूषण और गंदगी के एक ऐसे चक्रव्यूह में फँसा दिया है, जिससे बाहर निकलना चुनौतीपूर्ण होता जा रहा था। इन स्थितियों को देखते हुए 2 मई 2025 से दिल्ली सरकार ने एक ऐतिहासिक और विशाल स्वच्छता अभियान की शुरुआत की, जिसे 'बदल रही है दिल्ली' नाम दिया गया। इस अभियान का उद्देश्य केवल राजधानी को साफ करना नहीं, बल्कि वर्षों से लंबित पड़े सौंदर्यीकरण और पर्यावरणीय संरक्षण के कार्यों को गति देना और नागरिकों की सोच को बदलना भी है। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता की सरकार में शुरू हुए इस अभियान को विशेष महत्व इसलिए भी मिला क्योंकि यह पहली बार है जब दिल्ली में केंद्र सरकार, राज्य सरकार और एमसीडी तीनों के बीच तालमेल बनाकर 'ट्रिपल इंजन सरकार' की भावना के साथ कार्य किया जा रहा है। इस समन्वय का पहला बड़ा परिणाम यही स्वच्छता अभियान हैं, जिसकी योजना, क्रियान्वयन और निरीक्षण सभी स्तरों पर साझा रूप से किया जा रहा है।

मुख्यमंत्री ने स्पष्ट किया कि यह केवल प्रतीकात्मक पहल नहीं होगी, बल्कि हर दिन, हर इलाके में कार्य होगा। पूरे अभियान की समय–सीमा 20 दिन तय की गई है। इस अवधि में दिल्ली के हर मोहल्ले, हर गली, हर सार्वजनिक स्थल की गहन सफाई की जाएगी। इसके लिए न केवल सफाई कर्मचारियों की संख्या बढ़ाई गई है, बल्कि काम की गति और गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए एक निगरानी तंत्र भी बनाया गया है। सभी डीएम, डीसीपी, निगमायुक्त, और संबंधित विभागों के अधिकारी फील्ड निरीक्षण करेंगे और रोज अपनी रिपोर्ट मुख्यमंत्री कार्यालय को सौंपेंगे। साफ–सफाई दिन में दो बार – सुबह और शाम – की जाएगी, जिससे काम में नियमितता और निरंतरता बनी रहे।

इस अभियान के अंतर्गत कुछ बेहद सख्त कदम भी उठाए गए हैं। राजधानी की सुंदरता को नुकसान पहुँचाने वाली सबसे सामान्य लेकिन

शेष पृष्ठ 4 पर

जाति जनगणनाः सामाजिक न्याय की दिशा में एक जरूरी कदम या सामाजिक विघटन का कारण?

अंम्बर पाण्डेय
हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार तृतीय वर्ष

भारत जैसे विविधतापूर्ण समाज में जाति एक ऐतिहासिक और सामाजिक संरचना रही है, जो आज भी हमारे राजनीतिक ,सामाजिक और आर्थिक जीवन में गहराई से जुड़ी हुई है। इसी संदर्भ में जाति आधारित जनगणना का विचार आता है। यह केवल एक आंकड़े जुटाना की प्रक्रिया नहीं है,अपितु सामाजिक न्याय, नीतिगत निर्णय और सत्ता संतुलन जैसे महत्वपूर्ण पहलुओं से जुड़ा हुआ है। जाति जनगणना का मतलब है जनगणना के दौरान प्रत्येक नागरिक की जाति की जानकारी लेना। भारत में पिछली बार जातीय जनगणना सन 1931 में हुई थी। उसके बाद अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के आंकड़े ही लिए जाते हैं अन्य जातियों के नहीं। जाति जनगणना इसलिए महसूस की जा रही है क्योंकि सरकार के पास अन्य पिछड़ा वर्ग ओबीसी की जनसंख्या का वास्तविक आंकड़ा या सटीक आंकड़ा नहीं है। मंडल आयोग ने सन 1980 में यह अनुमान लगाया था कि ओबीसी की जनसंख्या लगभग 52: है लेकिन यह अनुमान भी 1931 की जाति जनगणना के आधार पर लगाया गया था। आज के दौर में नीतिगत आरक्षण, सामाजिक कल्याण योजनाएं और संसाधनों के न्याय संगत वितरण के लिए नए और वास्तविक आंकड़ों की आवश्यकता है। जाति जनगणना के पक्ष में यह तर्क दिया जाता है कि इससे सामाजिक न्याय को मजबूत किया जा सकेगा क्योंकि सरकार को पता चलेगा कि किन जातियों को अभी भी पीछे रखना है और किन जातियों को आगे बढ़ाने की आवश्यकता है, इसके अलावा उनके सामाजिक और आर्थिक स्थिति को समझा जा सकेगा तथा बिना किसी अनुमान के या राजनीतिक दबाव के सरकारी नीतियों को वैज्ञानिक आधार पर बनाया जा सकेगा। परंतु सवाल यह है कि देश की लोक नीतियां जाति देखकर बनाई जाएगी? क्या आरक्षण ही सामाजिक न्याय का एकमात्र आधार है? क्या जातियों को उनकी जनसंख्या के अनुपात में देश के संसाधनों और सेवाओं का आवंटन हमारी समस्याओं का सही समाधान है ? हालांकि जातिगत गणना के विरोध में भी कई तर्क सामने आते हैं कुछ लोगों का मानना है कि समाज में जातिगत पहचान और मजबूत हो जाएगी जिससे सामाजिक एकता पर और अधिक नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। इसके अलावा तकनीकी और प्रशासनिक कठिनाइयां भी हैं क्योंकि भारत में हजारों जातियां और उपजातियां हैं जिनका पहचान और वर्गीकरण करना बेहद कठिन है तथा आंकड़ों की विश्वसनीयता पर भी सवाल उठ सकते हैं और साथ ही साथ कुछ विशेषज्ञों की आशंका है कि जातिगत आंकड़े सार्वजनिक होने से संसाधनों के बंटवारे को लेकर और असंतोष और संघर्ष पैदा हो सकता है भारत सरकार ने 2011 की जनगणना में सामाजिक,आर्थिक और जाति जनगणना के तहत आंकड़े उठाए थे लेकिन 2015 में केवल सामाजिक और आर्थिक आंकड़े ही जारी किए गए जातिगत नहीं। हाल के कुछ वर्षों में कई राज्यों ने जातिगत जनगणना करने की पहल की जैसे बिहार,तेलंगाना, और कर्नाटक।अब तक केवल एससी और एसटी की ही गणना होती रही है इन वर्गों के आंकड़े हर जनगणना में जुटाए जाते हैं ताकि आरक्षण और कल्याणकारी योजनाएं

शेष पृष्ठ 4 पर

क्या सरकार की योजनाएं वास्तव में बेरोजगारी हटा रही हैं?

अच्युत शाही
हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार प्रथम वर्ष

यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न है जिस पर अक्सर बहस होती है। बेरोजगारी किसी भी अर्थव्यवस्था के लिए एक बड़ी चुनौती है। किसी भी देश की सरकार समय–समय पर विभिन्न योजनाएं लेकर आती है जिनका उद्देश्य समस्या से लड़ना होता है और इसका समाधान करना होता है।

हाल फिलहाल के वर्षों की बात की जाए तो भारत सरकार ने रोजगार बढ़ाने को एक प्राथमिकता दी है। मेक इन इंडिया पहल का उद्देश्य देश में विनिर्माण को बढ़ावा देना है जिससे नए उद्योगों की स्थापना हो और रोजगार के अवसर बढ़े।

ऐसे ही एक और स्कीम जिसका नाम है स्टार्टअप इंडिया इस स्कीम से युवा अपने व्यवसाय शुरू कर रहे हैं और दूसरों के लिए भी रोजगार पैदा कर रहे हैं।

कौशल विकास भी सरकार के एजेंडा में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना युवाओं के लिए विभिन्न प्रकार के कौशल को जागृत करने की कोशिश करने के लिए निकाला गया है इसमें विभिन्न प्रकार के कौशल प्रशिक्षित किए जाते हैं जिससे रोजगार मिलने की संभावना बढ़ जाती है।

ग्रामीण क्षेत्रों में भी अलग–अलग तरह की योजनाएं चलाई जाती है जिससे कि रोजगार बढ़ाया जा सके। यह बात सच है कि बेरोजगारी एक बढ़ती समस्या है और इसे पूरी तरह से खत्म करने में समय लगेगा मगर सरकार द्वारा उठाए कदम सही दिशा में है।

यानी यह कहा जा सकता है कि सरकार की योजनाएं निश्चित रूप से बेरोजगारी को कम करने की दिशा में काम कर रही है मगर थोड़ा धीमे। इन योजनाओ के माध्यम से ऐसा वातावरण बन रहा है जो अधिक रोजगार के अवसर पैदा हो रहे हैं।

युवाओं को अपने कौशल प्रस्तुत करने का मौका मिल रहा है और उम्मीद है कि आने वाले समय में गति तेज होगी और बेरोजगारी में गिरावट देखने को मिलेगी।

'पत्रकारिता के छः स्तंभ – कौन, क्या, कब, कहाँ, क्यों, और कैसे'

आशुतोष शर्मा
हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार तृतीय वर्ष

लोकतंत्र में पत्रकारिता को चौथा स्तंभ माना जाता है। एक पत्रकार का दायित्व केवल खबरें प्रस्तुत करना नहीं होता, बल्कि जनता को सही और सटीक जानकारी उपलब्ध कराना भी होता है। वह समाज की आँख और कान की तरह कार्य करता है, जिससे लोग अपने आसपास की घटनाओं को बेहतर ढंग से समझ सकें। इस भूमिका को प्रभावी ढंग से निभाने के लिए पत्रकार एक महत्वपूर्ण सिद्धांत अपनाते हैं, जिसे 5W और 1H कहा जाता है। यह सिद्धांत किसी भी समाचार की गहराई से पड़ताल करने और उसकी निष्पक्ष रिपोर्टिंग सुनिश्चित करने में सहायक होता है।

हर अच्छी पत्रकारिता इन छह अनिवार्य प्रश्नों पर टिकी होती है–कौन, क्या, कब, कहाँ, क्यों और कैसे। "कौन?"–इस प्रश्न का उत्तर यह बताता है कि खबर में शामिल मुख्य व्यक्ति या संगठन कौन हैं। यह खबर को मानवीय दृष्टिकोण देने के साथ–साथ उसकी विश्वसनीयता भी बढ़ाता है।

"क्या?"–यह सवाल किसी घटना, मुद्दे या गतिविधि को स्पष्ट करता है। पत्रकार इस प्रश्न के माध्यम से जटिल घटनाओं को सरल और सुगम भाषा में प्रस्तुत करते हैं। "कब?"–यह प्रश्न घटना की समय–सीमा को स्पष्ट करता है, जिससे पाठकों को यह समझने में आसानी होती है कि कोई घटना कब और किस क्रम में हुई। "कहाँ?"–समाचार का भूगोल भी उतना ही महत्वपूर्ण होता है। यह सवाल किसी घटना के स्थान को स्पष्ट करता है और उसके क्षेत्रीय व वैश्विक प्रभाव को उजागर करता है। "क्यों?"–यह प्रश्न घटनाओं के कारणों की खोज करता है। यह पत्रकारिता में विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण जोड़ता है और पाठकों को घटनाओं की गहरी समझ प्रदान करता है।

"कैसे?"–यह प्रश्न किसी घटना की प्रक्रिया, घटनाक्रम या कार्यप्रणाली को समझाने में मदद करता है। इससे पाठकों को पूरी कहानी का व्यापक दृष्टिकोण प्राप्त होता है।

श्री गुरु नानक देव खालसा कॉलेज (दिल्ली विश्वविद्यालय) में अध्ययन के दौरान मैंने 5W और 1H की अवधारणा को गहराई से समझा और आत्मसात किया। पत्रकारिता में इन प्रश्नों का महत्व केवल खबरों को रोचक बनाने तक सीमित नहीं है, बल्कि ये रिपोर्टिंग की सटीकता और पारदर्शिता को भी सुनिश्चित करते हैं। संकाय द्वारा प्रदान किए गए लेखन प्रशिक्षण के माध्यम से, मैं अपने पत्रकारिता करियर में इन सिद्धांतों को सफलतापूर्वक लागू करने के लिए तत्पर हूँ।

एक पत्रकार की सफलता इसी में है कि वह इन प्रश्नों के उत्तर देकर किसी भी खबर को स्पष्ट, संतुलित और प्रभावशाली बना सके। जब पत्रकार किसी समाचार को 5W और 1H के आधार पर प्रस्तुत करते हैं, तो वह न केवल लोगों को जागरूक करता है, बल्कि उन्हें अपने आसपास की दुनिया को समझने और सही निर्णय लेने में भी सहायता करता है। निष्पक्ष और प्रभावी पत्रकारिता के लिए यह सिद्धांत किसी भी रिपोर्टर का सबसे प्रमुख आधार है।

एआईः आज की तकनीकी क्रांति का नया चेहरा

शिवम शर्मा
हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार तृतीय वर्ष

यह आधुनिक युग तकनीकी प्रगति का प्रतीक है, और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) इसका एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुका है। एआई एक ऐसी तकनीक है, जिसमें मशीनें और कंप्यूटर मानव के समान सोचने, समझने और कार्य करने में सक्षम होते हैं। इसका महत्व इस बात से स्पष्ट है कि यह विभिन्न क्षेत्रों जैसे चिकित्सा, शिक्षा, कृषि, परिवहन और उद्योगों में तेजी से प्रयोग में आ रहा है। इसकी क्षमता हमारे जीवन को आसान और अधिक सटीक बनाने में सहायक हो रही है, चाहे वह रोजमर्रा के कार्य हों या बड़े पैमाने पर होने वाले विश्लेषण।

एआई का तेजी से विकास पिछले कुछ वर्षों में ही संभव हो पाया है। इसने कंप्यूटर विज्ञान और मशीन लर्निंग में हुए सुधारों का लाभ उठाया है और डेटाप्रोसेसिंग की क्षमता में सुधार के कारण इसकी उपयोगिता बढ़ी है। इसके विकास का एक महत्वपूर्ण कारण इंटरनेट का व्यापक प्रसार भी है, जिसने सूचना की उपलब्धता को बढ़ाया और एआई को अधिक शक्तिशाली बना दिया।

वर्तमान में एआई का प्रयोग चौटबॉट्स, सिफारिश इंजन, स्मार्ट होम डिवाइसेज और यहां तक कि चिकित्सा में भी हो रहा है, जहां यह बीमारी का सही निदान करने में मदद करता है। भविष्य में एआई के विकास की संभावनाएं और भी व्यापक हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि निकट भविष्य में एआई और भी अधिक उन्नत हो जाएगा, जिससे यह कार्यक्षमता में और भी अधिक दक्ष हो सकता है। एआई द्वारा कामकाजी प्रक्रिया को और अधिक तेज और कुशल बनाना संभव होगा, जिससे उद्योगों में उत्पादकता बढ़ेगी। शिक्षा क्षेत्र में यह शिक्षण को व्यक्तिगत बनाने में सहायक होगा, जबकि स्वास्थ्य सेवा में इसका उपयोग सटीक और तीव्र चिकित्सा समाधान उपलब्ध कराने में हो सकता है।

हालांकि, एआई के विकास के साथ ही इसके कुछ नकारात्मक पहलू भी हैं। इसकी एक बड़ी चिंता यह है कि यह बहुत से लोगों की नौकरियों को प्रभावित कर सकता है, क्योंकि मशीनें कुछ कार्यों को अधिक कुशलता से कर सकती हैं। इससे बेरोजगारी की समस्या उत्पन्न हो सकती है, खासकर उन क्षेत्रों में जहाँ नियमित और एकसमान कार्य शामिल होते हैं। इसके अलावा, एआई के तेजी से विकास के साथ सुरक्षा और नैतिकता की चिंताएं भी उत्पन्न हो रही हैं। एआईसिस्टम की पारदर्शिता और उनके निर्णय लेने की प्रक्रिया का समझ में न आना भी कई बार जोखिमपूर्ण हो सकता है।

फिर भी, एआई का सकारात्मक पक्ष इस पर हावी है। यदि इसका सही ढंग से उपयोग किया जाए और नैतिक सीमाओं का पालन किया जाए, तो यह समाज में विकास का एक प्रमुख साधन बन सकता है। एआई हमारी दैनिक जिंदगी का एक अहम हिस्सा बन गया है और यह स्पष्ट है कि आने वाले वर्षों में इसकी उपयोगिता और भी बढ़ेगी। इसे अपनाने के साथ ही इसके प्रति सावधानी और जिम्मेदारी भी आवश्यक है।

इस सुलगती आंच पर पानी डाल दीजिए, वरना सब कुछ हो जाएगा खाक!

सिद्धांत कुमार
हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार द्वितीय वर्ष

वित्त मंत्री ने तमिलनाडु सरकार को फटकार लगाई है.. इसकी आवश्यकता नहीं थी, अगर बात इतनी सहज होती तो पर सहज है नहीं, इसलिए ये फटकार जरूरी थी.. बात रूपये के भाषा के परिवर्तन का नहीं है, बात नीयत की है, भाषा बहुत बड़ा मसला था नहीं, बात नफरती दृष्टिकोण की थी। भारत का दक्षिणी हिस्सा समय–समय पर जो जताने का प्रयास करता रहा है वो किसी भी तरीके से, किसी भी स्थिति में स्वीकार किए जाने योग्य नहीं हो सकता। वो जो दलील देता रहा है कि हिंदी थोपी जा रही है उनपर, और इसके पीछे वो जो वजह बताता है कि उत्तरी राज्यों का देश के सियासी समीकरण में हावी होना, ये एक छलावा के सिवा और कुछ नहीं है.. बहुत सी चीजें मुख्य भूमिका में हैं उत्तर के राज्यों को सियासी रणक्षेत्र में प्रभुत्वशाली बना देने में, भाषा नहीं है इसलिए हिन्दी को लेकर जो वो कहता रहा है, वो बड़े वर्ग को गुमराह करने जैसा है। अपनी भाषा को लेकर जिस अहंकार बोध के साथ दक्षिण गुजरता रहा है, उसका 50 फीसदी हिस्सा भी उत्तरी भाग अपने साथ लेकर नहीं घूम रहा है।इसका सबूत ये है कि आजादी के इतने बरस बाद भी ये प्रत्यक्ष रूप से जानते हुए भी कि हिन्दी उस स्थिति में है बोलने और समझ सकने वालों के आंकड़े की दृष्टि से कि इसे राष्ट्रीय भाषा घोषित कर दिया जा सकता है आसानी से, इसने वैसा कर दिए जाने के लिए आंदोलन नहीं किया। देश, भाषा के नाम पर एक बड़ी विभीषिका से गुजर चुका है, दूसरी बार वो ऐसी स्थिति किसी भी कीमत पर नहीं पैदा होने दे सकता कि उसके घर में एक और लकीर खींच दी जाए। वित्त मंत्री के दिए गए चेतावनी को सिर्फ उन तक, या वित्त मंत्रालय तक ही महदूद मत रख लीजिएगा.. ये चेतावनी है देश की सरकार के तरफ से इस देश के किसी भी हिस्से में रहने वाले उन तमाम लोगों को जो अपने किसी भी किस्म के इरादे के अहंकार बोध के छांव के नीचे पनप रहे हैं। ये देश अपने सीने पर अलग–अलग समय में इसी देश के जाहिल लोगों के द्वारा दिए गए प्रांतवाद के जख्म को लेकर ढ़ो रहा है, इसलिए ये हिदायत है कि हद में रहना सीखिए ये हिदायत मिथिलांचल की मांग करने वाले उस पागल भीड़ को भी है।

जहाँ तक बात रही दक्षिण की, तो उसके संबंध में ये बात है कि हिंदी को लेकर दक्षिण के इस कदर के रवैये की ये कोई पहली घटना थोड़े है, ये नफरती आंच बहुत अरसे से राख के नीचे सुलग रही है, ये आंच पहले भी जाहिर होती रही है, पर जब उस पर ध्यान दिलाने की कोशिश की गई, बात चाही गई तो वहाँ की सरकार ने बहुत आसानी से ये कह कर पल्ला झाड़ लिया कि "कहाँ कुछ हुआ है, कुछ भी तो नहीं हुआ है.." पल्ला इस बार भी ठीक उतनी ही सहजता से झाड़ लेती, पर दिक्कत इस बार बस ये हो गई कि सरकारी पन्ने पर इसके सबूत निकल आए। पटना में फिल्म ट्रेलर का लॉन्च, इस बात का सबूत तो नहीं ही हो सकता न कि उस तरफ से सब कुछ ठीक है.. न ही ये उस चीज को दरकिनार कर सकता है कि जब मन करे तब सड़कों पर, मॉल में लोग पीट दिए जाए इसलिए कि वो आपकी क्षेत्रीय भाषा नहीं बोल सकते.. क्षेत्रीय ही न, ऐसा तो नहीं ही है न किसी क्षेत्र के लोग इस गुमान में जी रहे हों कि बस वही हैं सर्वमान्य। हर क्षेत्र की

शेष पृष्ठ 4 पर

देखो वो इंसा चला गया

पलक गुप्ता
हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार प्रथम वर्ष

देखो वो इंसा चला गया'
धर्म के नाम पर छला गया
जो कलमा नहीं पढ़ पाया
वो फिर लौट के घर नहीं आया
वो भारत देश में रहता था
मैं हिंदू हूं वो कहता था
पहलगाम कश्मीर में
वो परिवार के संग में बैठा था
कुछ लोग वहां तब आए थे
धर्म का झंडा लाए थे
कहने को तो इंसान थे वो
हैवान वेश में आए थे
मित्रता का हाथ बढ़ाकर
छल से उनको फंसा लिया
हिंदू हिंदू जो जो था
सबको खून से सना दिया
खुद को ये मानव कहते हैं
इनमें तो दानव रहते हैं
ये आतंक के जो आदि हैं
ये ही तो आतंकवादी हैं
नफरत का चोला ओढ़े
ये हिंदू हिंदू मार रहे
मैं हिंदुस्तान का हिंदू हूं
मानवता मन में रखता हूं
मैं भारत देश का वासी हूं
देश से प्रेम मैं करता हूं
धर्म पर ये जो छलते है
ये लोग सभी तैयार रहें
मैं कह देता हूं इन छलियों से
अब मरने को तैयार रहें
अब मरने को तैयार रहें।

ब्रज की होली

रशिक चौहान
हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार तृतीय वर्ष

भारत के सांस्कृतिक परिदृश्य में होली का त्योहार विशेष स्थान रखता है, और जब बात मथुरा और बरसाना की होली की हो, तो यह उत्सव एक अनूठी परंपरा और संस्कृति का प्रतीक बन जाता है। इन क्षेत्रों में होली का उत्सव केवल रंगों का खेल नहीं है, बल्कि यह स्थानीय संस्कृति, परंपराओं और समाज की गहरी समझ को भी प्रकट करता है। मथुरा और बरसाना, ब्रज क्षेत्र के प्रमुख स्थल हैं, जो भगवान कृष्ण और राधा की लीलाओं से जुड़े हुए हैं।यहां की होली, विशेष रूप से लट्ठ मार होली, विश्व प्रसिद्ध है।

लट्ठ मार होली की परंपरा भगवान श्रीकृष्ण और राधारानी के समय से चली आ रही है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, जब कृष्ण अपनी सखाओं के साथ बरसाना में राधा और उनकी सखियों पर रंग डालने आते थे, तो गोपियां उन्हें लाठियों से मार कर भगा देती थीं। यह परंपरा आज भी जीवित है। जब नंद गांव के पुरुष रंग खेलने बरसाना आते हैं, तो बरसाना की महिलाएं लाठियों से उनका स्वागत करती हैं। हालांकि आज के आधुनिक परिदृश्य में भी इन परंपराओं का महत्व बना हुआ है, लेकिन इसके साथ–साथ कई सामाजिक और सुरक्षा से जुड़ी चुनौतियां भी सामने आती हैं। मथुरा और बरसाना में होली के दौरान आने वाली भारी भीड़, असुरक्षित परिस्थितियां, और कभी–कभी अनुचित व्यवहार की घटनाएं पर्यटकों, विशेष कर महिला यात्रियों के लिए चिंता का विषय बन जाती हैं। आधुनिक जीवन की तेज रफ्तार और बदलते सामाजिक परिदृश्य में, जहां पारंपरिक मान्यताएं समय के साथ विकसित हुई हैं, वहीं सुरक्षा और व्यक्तिगत स्वतंत्रता की मांग भी बढ़ी है। इस संदर्भ में, स्थानीय प्रशासन और समाज को यह सुनिश्चित करना होगा कि इस पावन उत्सव में महिलाएं न केवल सांस्कृतिक धरोहर का आनंद ले सकें, बल्कि उनकी सुरक्षा और सम्मान भी बनाए रखा जाए।यही संतुलन ब्रज संस्कृति के असली सार को संरक्षित करने में सहायक सिद्ध होगा।

वर्तमान समय में महिलाओं की भूमिका

आयुषि मिश्रा
हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार प्रथम वर्ष

वर्तमान समय में महिलाओं की भूमिका एवं भागीदारी सभी क्षेत्रों में प्रेरणादायी एवं सभी महिलाओं के लिए सराहनीय विषय है। प्रत्येक क्षेत्र में महिलाओं ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। महिला सशक्तिकरण के इस उभरते युग में हमें केवल कार्यरत महिलाओं को ही सशक्त एवं आत्मनिर्भर नहीं कहना चाहिए तथा यह मानना पूर्णतः गलत होगा कि वर्तमान में केवल कार्यरत महिलाएं ही सशक्त हैं तथा अपने हक के लिए लड़ सकती हैं। महिला सशक्तिकरण में गृहणी महिलाओं, नाबालिग लड़कियों तथा बुजुर्ग महिलाओं का योगदान भी बराबर है।महिला सशक्तिकरण को आगे बढ़ाने तथा सफल करने के लिए सरकार ने भी कई कदम उठाए तथा कई योजनाएं शुरू कीं, जैसेः 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ', 'उज्ज्वला योजना', 'स्वाधार गृह योजना', 'प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना' आदि। इसके माध्यम से महिलाओं को शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता, रोजगार, सुरक्षा आदि वर्गों में सहायता मिली है।वर्तमान में दिल्ली की मुख्यमंत्री बनीं रेखा गुप्ता जी अनेकों महिलाओं की प्रेरणा बनी हैं तथा उन सभी को भी अपनी मंजिलों तक पहुंचने में एक स्त्रोत के रूप में उभरी हैं। पहलगाम में हुए आतंकी हमलों के जवाब में भारत द्वारा आतंकवादियों के ठिकानों को नष्ट करने के लिए किए गए 'ऑपरेशन सिंदूर' को दो महिला अफसरों, व्योमिका सिंह और सोफिया कुरैशी, ने लीड किया तथा सफलतापूर्वक मिशन को अंजाम दिया। ऐसा करके उन्होंने सभी भारतीयों को एक संदेश भी दिया कि महिलाएं सभी क्षेत्रों में निपुण हैं।राजनीति, रक्षा दल, संस्कृति, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मेडिकल, पत्रकारिता, खेल, अंतरिक्ष आदि सभी क्षेत्रों में महिलाएं सशक्त एवं सक्षम हैं। अब समय आ गया है कि 'हमारी छोरियां छोरों से कम हैं के' इस कहावत को बदलकर 'हमारी छोरियां छोरों से ज्यादा हैं' कहा जाए।

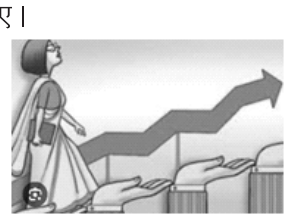

महिला सुरक्षा

नैना
हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार तृतीय वर्ष

महिला सुरक्षा शुरू से ही एक अहम मुद्दा बना रहा है फिर चाहे वह आजादी से पहले की बात हुई आजादी के बाद महिलाओं में सुरक्षा पर हर बार सवाल खड़ा रहा है जैसे–जैसे समय में बदलाव आता रहा है वैसे ही इस सवाल के मायने में बदलते रहे हैं पहले महिलाओं को आर्थिक रूप से कमजोर कर उनका शोषण किया जाता था और अब शारीरिक रूप से छेड़छाड़ कर उनका शोषण किया जाता है चाहे वह 1900 का समय हो या फिर 2024 महिलाओं की स्थिति में सुधार नहीं है उसे समय महिलाओं को पर की जूती बनकर रखा जाता था और आज अपनी हवस मिटाने का एक जरिया भारत में समाज है जहां महिलाओं को देवी का रूप माना जाता है जहां कन्याओं को पूजा जाता है फिर भी सवाल न जाने क्यों महिलाओं की सुरक्षा पर ही आता है भारत में हर दिन एक नया के सामने आता है और उसे कैसे को सुनने के बाद हर लड़की के जहां में एक ही सवाल आता है कि क्या लड़की होना पाप है?

आज के समय में महिला सुरक्षा एक काफी विश्व व्यापी मुद्दा बन गया है महिलाएं देश के कल्याण विकास में पूर्ण योगदान निभाती है फिर भी क्यों वह इस देश में अकेले घूमने से घबराते आती है आज भारत में इतनी हवाईयात भर गई है कि हर जगह हर कोने में लड़कियों के प्रति गंदी नजरें छुपी है, आज लड़कियों की सुरक्षा एक बड़े सवाल से जूझ रही है।

एक पुरुष की अंतिम यात्र

अंशुमान कृष्ण
हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार प्रथम वर्ष

हर मोड़ पर कुछ यादें थीं,
कुछ मुस्कानें, कुछ आहें थीं।
पर आँखों में न कोई डर,
न भविष्य का कोई असर।
वृक्ष झुके, पवन रुकी,
जैसे सृष्टि भी कुछ कहती थी।
सूरज धीरे–धीरे ढला,
फिर भी मन उसका उजला।
जब अंतिम डगर आई सामने,
उसने त्याग दिए सब दर्पण–सपने।
शांत हृदय, मुक्त आत्मा से,
वो चल पड़ा अनंत रस्ते।
आज वो चुप है, लेकिन सब कह गया,
मौन में जीवन का गीत बह गया।
थकी हुई साँसें, बुझती नजरें,
ले चलीं उसे उस पार की डगरें।
कंधों पे नहीं अब बोझ समय का,
न रहा डर किसी अपराध या भ्रम का।
जो किया, सो किया, जो सहा, सह गया,
जो न कहा, वो भी शायद कह गया।
छोटा सा बिस्तर, कुछ पीली दवाएँ,
दीवारों पर झूलती सूनी हवाएँ।
संतानें खड़ीं, पर शब्द मौन हैं,
आँखें नम – और चरणों में कौन हैं?
कोई तस्वीर जो अब धुँधली पड़ी है,
किसी की हँसी जो दिल में अड़ी है।
कभी जो पिता था, छाया–सा ढलता,
अब वही शरीर बिन प्राणों के चलता।
वो विदा लेता है, पर आहट नहीं,
उसकी चुप्पी में भी शिकायत नहीं।
कभी रोया नहीं जो, आज भी नहीं रोता,
बस समय की लहरों में चुपचाप होता।
मशान की राख में जीवन पिघलता,
धुएँ में कोई नाम धीरे–धीरे बदलता।
रिश्ते, शरीर, सारे बंधन खो गए,
और वह – बस स्मृति बनकर रह गए।

एक कहानी ऐसी भी

पलक गुप्ता
हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार प्रथम वर्ष

आज फिर एक ऐसी कहानी सुना रही हूं...
अपने शब्दों से लोगों के भाव बता रही हूं...
जो अक्सर लोग बस महसूस करके छोड़ देते हैं,
आज उन्ही भावनाओं के राज सुना रही हूं..
जी हां आज मैं प्यार सुना रही हूं।

काश मैं मनुष्य न होता

रमन कुमार पाण्डेय
हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार तृतीय वर्ष

उठ चुका हूं सपनों से,
टूट चुका हूं निज मन से!
रूठने ने की कोई वजह नहीं है,
दोस्ती जब से, हुई है गम से!
न वक्त मेरा,ना मैं किसी का रहा,
चांदनी रात की तरह सिमटता रह गया!
जग सूरज की रोशनी में चमकता रहा,
मैं अंधेरे की तरह ढलता गया!
क्या कठिन है?क्या आसान है?
इस बला का हल ढूंढता रह गया।
खत्म हुई अब मेरी कहानी,
जब सोया तब सवेरा ना हुआ!
फिर समझा क्या है जीवन!
जैसे सागर और गगन का हो मिश्रण!
लौट ना पाऊंगा अब मैं इस फिजा में,
बड़ा कठिन है जीना इस भंवर में!
सत्य और मिथ्य का मैं अबला!
जाने कैसे निरंतर जीता रहा!
काश मैं मनुष्य न होता,
मनुष्य होकर भी पौरूष्य न होता।

सच्ची दौलत

अंम्बर पाण्डेय
हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार तृतीय वर्ष

ना चाहतों का शोर हो,
ना ख्वाब कोई अधूरा हो,
बस दिल में चौन का मौसम, और मन सदा पूरा हो।

हर रोज की ये दौड़ नहीं,
हर जीत का नशा भी नहीं,
जो पाया, उसमें रस ढूँढूं,
ना हो कोई गिला कहीं।

आईने में चेहरा देखूं,
तो मुस्कान हो बेफिक्री की,
ना शिकवा बीते कल से,
ना फिक्र किसी तकदीर की।

छोटी–छोटी बातों में भी,
जब ख़ुशियों की सौगात मिले,
तो जानो अंदर की दुनिया में,
संतोष की बारात मिले।

न तुलना की आग सुलगे,
न ईर्ष्या का जहर पले,
जो हो मेरे हाथों में,
वही खुशी का गीत चले।

ना जरूरत हो ऊँचाई की,
ना भीड़ में पहचान की,
बस खुद से हो रिश्ता गहरा,
और बात हो सम्मान की।

सच्ची दौलत वही है साथी,
जो मन को शांत करे,
भीतर एक दीप जले,
जो हर अंधेरे को हर ले।

विजयंत एनसीसी में पहली बार SW कैडेट्स की ऐतिहासिक शुरुआत

दिल्ली विश्वविद्यालय के श्री गुरु नानक देव खालसा कॉलेज की प्रतिष्ठित विजयंत एनसीसी यूनिट ने वर्ष 2024–25 में एक नया इतिहास रचते हुए पहली बार सीनियर विंग (SW) में लड़कियों की भागीदारी की शुरुआत की। यह कदम न केवल कॉलेज के लिए गौरव का विषय बना, बल्कि सभी नव–नामांकित कैडेट्स के लिए प्रेरणा का स्रोत भी रहा।

अब तक केवल बॉयज कैडेट्स को प्रशिक्षण देने वाली यह यूनिट अब महिला कैडेट्स को भी राष्ट्रीय सेवा, अनुशासन और नेतृत्व के गुणों से सुसज्जित कर रही है। इस नई शुरुआत में कैडेट्स को लेफ्टिनेंट (डॉ.) घनश्याम बैरवा और प्रो. दीपमाला का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ, जिनके नेतृत्व में कैडेट्स ने विभिन्न राष्ट्रीय स्तर की गतिविधियों और प्रतियोगिताओं में भाग लिया और सराहनीय प्रदर्शन किया।

दिल्ली के कई प्रतिष्ठित कॉलेजों में आयोजित NCC प्रतियोगिताओं में विजयंत यूनिट की टीम ने उल्लेखनीय सफलता हासिल की। टग ऑफ वॉर जैसी टीम इवेंट्स में प्रथम और द्वितीय स्थान प्राप्त कर यूनिट ने कॉलेज का नाम रोशन किया। साथ ही जानकी देवी मेमोरियल कॉलेज, दिल्ली टेक्नोलॉजिकल यूनिवर्सिटी, आर्यभट्ट कॉलेज और इंद्रप्रस्थ महिला कॉलेज में हुए मुकाबलों में कैडेट्स ने अपने अनुशासन और टीम भावना का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया।

इसके अलावा, कैडेट्स ने कंबाइंड एनुअल ट्रेनिंग कैंप (CATC) में भी सक्रिय रूप से भाग लिया, जो उनके लिए एक चुनौतीपूर्ण एवं सीखने का अनुभव रहा। सुबह की परेड, शारीरिक प्रशिक्षण, थ्योरी क्लासेस और सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने कैडेट्स को मानसिक और शारीरिक रूप से मजबूत बनाया। इस कैंप में कैडेट वेदिका बेनीवाल और तमन्ना कौशिक ने क्रमशः टग ऑफ वॉर और एक्सटेम्पोर प्रतियोगिताओं में प्रथम स्थान प्राप्त कर यूनिट का गौरव बढ़ाया।

यूनिफॉर्म पहनने से लेकर अनुशासित जीवन शैली अपनाने तक, इन युवा महिला कैडेट्स ने अपने पहले वर्ष में ही यह सिद्ध कर दिया कि वे भी किसी से कम नहीं। विजयंत एनसीसी यूनिट की पहली SW बैच न केवल एक नई शुरुआत है, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्तंभ भी बनेगी।

हिंदी साहित्य सभा 'मंथन' द्वारा आयोजित वार्षिक साहित्यिक कार्यक्रम में छात्रों ने दिखाई प्रतिभा की चमक

17 अप्रैल 2025 को श्री गुरु नानक देव खालसा महाविद्यालय (दिल्ली विश्वविद्यालय) में हिंदी व हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के हिंदी साहित्य सभा श्मंथनश द्वारा उनके वार्षिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमे अंतर महा विद्यालयीन साहित्यिक भाषण प्रतियोगिता ,प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता तथा आशु लेखन प्रतियोगिता आदि शामिल थीं, जिनमें छात्रों ने उत्साहपूर्वक भाग लेकर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया।

साहित्यिक भाषण प्रतियोगिता में प्रतिभागियों ने अपने भाषण तथा वाद–विवाद शैली को प्रस्तुत किया जिसके जरिए उनको शिक्षको से अपने उज्जवल भविष्य के लिए मार्गदर्शन भी प्राप्त हुआ। आशु लेखन प्रतियोगिता मे छात्रों ने अपनी हिन्दी भाषा में कहानियाँ लिखकर अपनी रचनात्मकता का परिचय दिया।

प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता मे प्रतिभागियों ने अपने ज्ञान को प्रदर्शित किया तथा अपनी योग्यता को प्रखरता के साथ प्रस्तुत किया।

इस कार्यक्रम के माध्यम से "हिंदी साहित्य सभा मंथन" ने भारतवर्ष कि साहित्यिक धरोहर को बचाए रखने तथा उसे आसमान की ऊंचाई तक पहुँचाने का पुरजोर प्रयास किया।

कार्यक्रम के अंत में सभी विजेताओं को पुरस्कार राशि एवं प्रमाण पत्र प्रदान किए गए। इस विशेष अवसर पर विभाग प्रभारी प्रो. दीपमाला कि गरिमामयी उपस्थिति रही। कार्यक्रम में विभाग के सभी प्राध्यापक एवं छात्र मौजूद रहें।

इस सुलगती आंच... (पृष्ठ 2 का शेष)

अपनी अलग–अलग भाषा है, और ऐसा है तो दिक्कत होगी ही, तब जब दो अलग–अलग क्षेत्र को एक पटल पर आकर बातचीत करनी होगी.. और ऐसा होगा तो उस एक भाषा की तलाश होगी ही जिससे दोनों परिचित हों। दक्षिण की दलील है की अंग्रेजी होगी वो माध्यम, दक्षिण को छोड़कर बाकियों की ये दलील है कि अंग्रेजी इस देश की भाषा नहीं है.. यहाँ पेंच है, पर इसका हल बहुत साधारण है, और वो है भाषा हिन्दी। हिन्दी हम आज तक समझ नहीं पाए कि कहाँ की भाषा है, क्योंकि दिल्ली भी बोल रहा है, गुजरात भी, राजस्थान भी, कश्मीर, उत्तराखंड, उत्तरप्रदेश, बिहार, बंगाल, मध्यप्रदेश, यहाँ तक की हैदराबाद, महाराष्ट्र भी.. अपने लहजे में बोल रहा है, पर बोल रहा है.. और यहाँ जो बात आपको नहीं पता है वो ये कि इनमें से हर प्रदेश की अपनी भाषा है, पर इनमें से किसी ने भी 'स्टालिन सरकार' सी तब्दीली करने की कवायद नहीं की.. और ऐसा तो है नहीं कि दक्षिण सहज नहीं है हिन्दी के साथ, तमाम मौके पर साबित करता रहा है वो कि उसे हिन्दी की आवश्यकता है। पैसे के लिए उसने अपनी फिल्मों पर अतिरिक्त मेहनत की, उसे डब कर उत्तरी भू–भाग को साधने की कवायद की.. हिन्दी को थाम कर जितने मौके बनाए जा सकते थे, उसने बनाए ही, जितने फायदे उठाए जा सकते थे, उठाए ही.. सस्ते मजदूरों की आवश्यकता हुई तो, उसने तमाम नफरतों के बाद भी उत्तरी क्षेत्र को ही चुना। बॉलीवुड से लेकर ब्युरोक्रेसी तक, कहाँ उसने ये दिखाया कि जिसे वो हिंदी क्षेत्र मानकर दुत्कारता रहा है, उसके बिना वो ठीक है.. और वो है भी, तो अपन नहीं हैं.. एक कहानी सुनाए, सुनो.. चुंबक देखे हो, बड़ा–छोटा कोई भी। चुंबक कितना भी छोटा हो न, उसमें दो पोल जरूरी तौर पर होते ही है, नॉर्थ पोल और साउथ पोल, माने उत्तरी ध्रुव और दक्षिणी ध्रुव.. एक के भी अभाव में चुंबक का अस्तित्व नहीं होगा। जिस भारत की परिकल्पना हमारे जेहन में है वो बिखर जाएगा, बचेगा नहीं क्योंकि वो क्या है कि पांव कितना भी खूबसूरत हों, सर के बिना उसका कोई अस्तित्व नहीं रह जाता। एकता रहेगी, तो देश भी रहेगा। बड़ा ख़ूबसूरत सा शेर है कि "चमन में इख़्तिलात–ए–रंग–ओ–बू से बात बनती है
हम ही हम हैं तो क्या हम हैं तुम ही तुम हो तो क्या तुम हो
हमारा प्यार रुस्वा–ए–जमाना हो नहीं सकता
न इतने बा–वफा हम हैं न इतने बा–वफा तुम हो"

बदल रही दिल्ली... (पृष्ठ 1 का शेष)

गंभीर समस्या कृ सार्वजनिक दीवारों पर लेखन और पोस्टरबाजी – पर अब सख्त रोक लगा दी गई है। कोई भी संस्था, संगठन या व्यक्ति यदि किसी दीवार पर अवैध ढंग से कुछ लिखता या चिपकाता हुआ पाया गया, तो उस पर जुर्माना लगाया जाएगा और कानूनी कार्रवाई की जाएगी। दीवारें अब स्वच्छता और संस्कृति का प्रतीक बनेंगी। उनके ऊपर आकर्षक चित्रकारी, प्रेरक संदेश और लोक कलाओं के चित्र चिपकाएं जाएंगे। इन कलात्मक दीवारों का उद्देश्य केवल सौंदर्यीकरण नहीं, बल्कि नागरिकों को स्वच्छता, पर्यावरण और समाज के प्रति जागरूक बनाना भी है।

स्वच्छता केवल कूड़े–कचरे तक सीमित नहीं रहती। प्लास्टिक का प्रयोग, विशेषकर सिंगल यूज प्लास्टिक, आज पूरे देश के लिए एक गंभीर पर्यावरणीय चुनौती बन चुका है। दिल्ली में इस दिशा में एक बड़ी पहल की गई है। सभी धार्मिक स्थलों और स्कूलों में सिंगल यूज प्लास्टिक पर पूर्ण प्रतिबंध लागू किया गया है। मंदिरों, मस्जिदों, गुरुद्वारों, चर्चों आदि से अनुरोध किया गया है कि वे श्रद्धालुओं से यह सुनिश्चित करवाएँ कि प्लास्टिक की थैलियाँ, बोतलें या अन्य सामग्री का प्रयोग न हो। स्कूलों में बच्चों को प्लास्टिक के विकल्पों के प्रति शिक्षित किया जाएगा और 'पर्यावरण योद्धा' के रूप में तैयार किया जाएगा।

एक और महत्वपूर्ण आयाम है –पौधारोपण। दिल्ली में प्रदूषण और धूल की समस्या काफी गंभीर रही है। अनेक इलाकों में निर्माण स्थलों, खुली सड़कों और अनुपयोगी खाली जमीनों पर धूल का जमाव होता है जो हवा में प्रदूषण को बढ़ाता है। इस अभियान के तहत ऐसे क्षेत्रों की पहचान कर वहाँ पौधे लगाए जा रहे हैं। पौधरोपण न केवल पर्यावरण के लिए लाभकारी है, बल्कि यह मानसून, और शहर की हरियाली को भी संतुलित करता है। दिल्ली को केवल साफ नहीं बल्कि हरा–भरा भी बनाना इस अभियान का लक्ष्य है।

इस पूरे महाअभियान में जनता की भूमिका बेहद महत्वपूर्ण है। दिल्ली सरकार ने इसे केवल सरकारी प्रयास तक सीमित नहीं रखा, बल्कि इसे जनांदोलन का रूप देने का प्रयास किया है। स्कूलों, कॉलेजों, स्वयंसेवी संस्थाओं, आरडब्ल्यूए (Resident Welfare Associations), युवाओं के समूहों और स्थानीय व्यापारियों को अभियान से जोड़ा गया है। कई स्थानों पर नुक्कड़ नाटक, रैलियां, जागरूकता शिविर और चित्रकला प्रतियोगिताएं आयोजित की जा रही हैं। नागरिकों को यह संदेश दिया जा रहा है कि 'स्वच्छ दिल्ली' किसी एक संस्था की नहीं, बल्कि हर निवासी की जिम्मेदारी है। सरकार ने अभियान की पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए डिजिटल तकनीक का भी सहारा लिया है। हर इलाके में होने वाले सफाई कार्यों को ऑनलाइन ट्रैक किया जा रहा है। नागरिकों को मोबाइल ऐप या हेल्पलाइन के माध्यम से गंदगी की शिकायत दर्ज करने की सुविधा दी गई है। जोनल अधिकारी इन शिकायतों को सुनिश्चित कर रहे हैं और रिपोर्ट सीधे मुख्यमंत्री कार्यालय तक जा रही है।

स्वच्छता केवल एक भौतिक कार्य नहीं, बल्कि यह नागरिक चेतना और सामाजिक अनुशासन का भी प्रतिबिंब होती है। दिल्ली सरकार इस बात को भली–भाँति समझती है। इसीलिए स्कूलों और कॉलेजों में विशेष कक्षाएं आयोजित की जा रही हैं जहाँ बच्चों को स्वच्छता की उपयोगिता समझाई जा रही है। सफाई कर्मचारी, जिन्हें अक्सर समाज में नजरअंदाज किया जाता है, इस अभियान के नायक बनकर उभरे हैं। उनके लिए प्रोत्साहन राशि, हेल्थ चेकअप और सम्मान समारोह जैसी योजनाएँ चलाई जा रही हैं।

स्वच्छता और सतत विकास का गहरा संबंध है। जब एक शहर स्वच्छ होता है, तो वहाँ के नागरिकों का स्वास्थ्य बेहतर होता है। बीमारियों पर खर्च कम होता है और कार्यक्षमता बढ़ती है। स्वच्छ और सुंदर शहरों में पर्यटन और निवेश को भी बढ़ावा मिलता है। दिल्ली, जो विश्वभर के पर्यटकों की पसंदीदा जगहों में से एक है, स्वच्छता के माध्यम से अपने आकर्षण को और अधिक बढ़ा सकती है। स्वच्छ सड़कों, दीवारों पर कलाकृतियों और हरियाली से सुसज्जित दिल्ली एक नई पहचान बनाएगी कृ एक आधुनिक, जिम्मेदार और जीवंत राजधानी की।

'बदल रही है दिल्ली' केवल एक नारा नहीं, बल्कि एक परिवर्तन की शुरुआत है। यह अभियान यह साबित करता है कि यदि इच्छाशक्ति हो, तो सरकार और जनता मिलकर किसी भी जटिल समस्या को सुलझा सकते हैं। आने वाले दिनों में यह देखा जाएगा कि क्या यह अभियान दिल्ली को स्थायी रूप से स्वच्छ बना पाया या नहीं, लेकिन इसकी सकारात्मक दिशा ने यह सिद्ध कर दिया है कि परिवर्तन संभव है। यह अभियान स्वच्छता के साथ–साथ सामाजिक जिम्मेदारी, प्रशासनिक जवाबदेही और नागरिक चेतना का एक सामूहिक उत्सव बन गया है।

इस पहल के माध्यम से राजधानी ने यह संदेश दिया है कि अब समय आ गया है कि हम केवल अपने घर को नहीं, बल्कि अपने शहर को भी 'अपना' समझें। यदि प्रत्येक नागरिक एक छोटा–सा योगदान दे, यदि हर मोहल्ला एक छोटी–सी जिम्मेदारी ले, और यदि प्रशासन निरंतर सजग बना रहे, तो 'बदल रही है दिल्ली' एक अस्थायी अभियान नहीं बल्कि स्थायी बदलाव की मिसाल बन जाएगा। दिल्ली का भविष्य अब केवल योजनाओं में नहीं, बल्कि उसके निवासियों की सोच और कर्म में निहित है।

जाति जनगणना..... (पृष्ठ 1 का शेष)

बनाई जाए परंतु सवाल किया जाए क्या इन वर्गों की स्थिति में सुधार हुआ है? इसका उत्तर आंशिक रूप से हां और आंशिक रूप से ना होगा पिछले कुछ दशकों में कुछ हद तक प्रगति तो हुई है परंतु देश के कई हिस्सों में एससी और एसटी समुदाय के लोग अभी भी गरीबी ,भेदभाव, शिक्षा की कमी और अवसरों के अभाव से जूझ रहे हैं जाति जनगणना राजनीतिक रूप से भी संवेदनशील से मुद्दा है इसे राजनीतिक दलों की रणनीतियां प्रभावित होती हैं। जाति जनगणना के समर्थन और विरोध दोनों पक्षों में मजबूत तर्क है एक ओर यह सामाजिक न्याय और कल्याणकारी नीतियों के लिए उपकरण बन सकता है, तो वहीं दूसरी ओर समाज में जातिगत ढांचे को और गहरा कर सकता है,इसलिए यदि जाति जनगणना हो रही है तो यह जरूरी है कि इसे संवेदनशील,गोपनीय और वैज्ञानिक तरीके से किया जाए ताकि इसका दुरुपयोग ना हो, और इसे प्राप्त आंकड़े नीति निर्माण के वास्तविक उद्देश्यों के लिए इस्तेमाल हो। जाति जनगणना सामाजिक ढांचे और लोकतांत्रिक प्रक्रिया का महत्वपूर्ण पहलू है यह केवल आंकड़ों का संग्रह नहीं है बल्कि सामाजिक समानता, न्याय और अवसरों के वितरण से जुड़ा प्रयास है इसे लेकर चल रही बहस हमारी लोकतांत्रिक जटिलताओं को दर्शाती है। भविष्य में इसके निष्पक्ष और जिम्मेदार उपयोग के जरिए यह देश की प्रगति में सहायक हो सकता है

मार्गदर्शक मंडल

संरक्षक : **प्रो. बलजीत सिंह,** कार्यवाहक प्राचार्य, श्री गुरु नानक देव खालसा कॉलेज
मार्गदर्शिका : **प्रो. दीपमाला,** विभाग प्रभारी, हिंदी और हिंदी प. एवं ज. विभाग

संपादक मंडल

संपादक : **डॉ रुद्रेश नारायण मिश्रा**, सहायक प्राध्यापक, हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग
छात्र संपादक : **अम्बर पांडेय**, बी.ए. (ऑनर्स) हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार, तृतीय वर्ष
सूचना नंदा, बी.ए. (ऑनर्स) हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार, तृतीय वर्ष
छात्र उप–संपादक : **पलक गुप्ता**, बी.ए. (ऑनर्स) हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार, प्रथम वर्ष
रुद्राक्ष शर्मा, बी.ए. (ऑनर्स) हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार, प्रथम वर्ष
छात्र सहायक संपादक : **शाश्वत सृजन,** बी.ए. (ऑनर्स) हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार, तृतीय वर्ष